जीवन की विडंबना

राजेंद्र यादव 'फरीदाबादी'

जीवन की विडंबना क्या होगी?
जब जीवन ही एक विडंबना है ।
अलंकारों की श्रृंगारिकता क्या होगी?
जब अलंकार ही एक श्रृंगार है ।

जीवन की विषमता क्या होंगी?
जब जीवन ही एक विषमता है ।
जीवन की विडंबना क्या होगी?
जब जीवन ही एक विडंबना है

जीवन की विषम और सम परिस्तिथियों में क्या कोई स्थिर रहता है?
जीवन की हालों से चंचल हो जीवन बहता रहता है ।
विषम स्थितियों में भी सदैव विषम ना रहता है ।
फिर क्यों मानव तलवों को चाटा करते हैँ।
लघु भय से दीर्घ संकट का निःस्वास लिया करते हैं ।
जीवन की विषमता क्या होंगी?
जब जीवन ही एक विषमता है ।
जीवन की विडंबना क्या होगी?
जब जीवन ही एक विडंबना है ।

जीवन से परिचित होकर भी,
अपरिचित–सा व्यवहार करे।
सुबह साम और आठो याम,
राम रहीम का नाम जपे।
मन्दिर मस्जिद जाकर भी, चिंता भय में रहता है ।
जीवन की चिंता क्या होगी?
जब जीवन की भी चिंता है ।
जीवन की विडंबना क्या होगी?
जब जीवन ही एक विडंबना है ।